STRUCTURE & RELIEF OF EXTRA-PENINSULAR INDIA

भारत एक विशाल भूखण्ड है जिसका धरातल सभी भागों में भौतिक दृष्टि से समान नहीं है। इसमें कहीं ऊँचे गगनचुम्बी पर्वत, कहीं विस्तृत मैदान, कहीं कठोर भूमि वाले पठार कहीं उष्ण बालू के मरुस्थल, कहीं सघन वन पाये जाते हैं। भारत के सम्पूर्ण क्षेत्रफल का 10.7% पर्वतीय भाग, 18.6% पहाड़ियाँ और 43% भूभाग मैदानी है।

भौगोलिक दृष्टिकोण से भारत को चार भागों में विभक्त किया जाता है। (I) उत्तरी पर्वत (II) वृहत मैदान (III) प्रायद्वीपीय उच्च भूमि (IV) भारतीय तट एवं द्वीप।

I) <u>उत्तर पर्वतीय प्रदेश</u> :— इसकी स्थिति देश के उत्तरी सीमांत के सहारे पश्चिम में पाकिस्तान की पूर्वी सीमा से लेकर पूर्व में म्यानमार की सीमा तक लगभग 2500 Km की लम्बाई, 240-320 Km की चौड़ाई एवं लगभग 5 लाख Km^2 के क्षेत्र पर विस्तृत पाई जाती है। इस क्षेत्र में हिमालय की मुख्य अक्ष चापाकार में पश्चिम से पूरब की दिशा में सिंधु एवं ब्रह्मपुत्र नदियों के बीच फैली है जिसके अंतर्गत जम्मू-कश्मीर, ~~हिमाचल~~ हिमाचल प्र०, उत्तराखंड, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, अरुणाचल प्र० के भाग समाहित हैं। इसकी उपशाखा नागालैंड, मणिपुर एवं मिजोरम से होती हुई भारत-म्यानमार सीमा के सहारे उत्तर-दक्षिण दिशा में फैली हुई है। हिम के आगार के रूप में हिमालय विश्व के नवीन एवं सबसे ऊँचे मोड़दार पर्वतक्रम को प्रदर्शित करता है जिसकी सागर तल से ऊँचाई 8000 m से भी अधिक पाई जाती है। यह तीन समांतर पर्वत श्रेणियों से मिलकर बना है —

(a) हिमाद्रि (महान हिमालय) (b) हिमांचल (लघु हिमालय)
(c) शिवालिक (बाह्य हिमालय)

(1) महान हिमालय :— इसे हिमाद्रि, मुख्य हिमालय, या आन्तरिक हिमालय भी कहा जाता है। इसका विस्तार सिंधु नदी के मोड़ से ब्रह्मपुत्र नदी तक लगभग 2500 km में है। इसकी औसत चौड़ाई 25 km तथा औसत ऊँचाई 6000 m है। जास्कर श्रेणी का विकास उत्तर-पश्चिम की ओर इसी श्रेणी में से है, जिसके पीछे सिंधु नदी बहती है। जास्कार श्रेणी के उत्तर-दक्षिण में देवसाई और रूपशू के ऊँचे मैदान स्थित है। इस पर्वत श्रेणी में 7000 मी. से अधिक ऊँचाई वाली 40-चोटियाँ है। इसमें माँउट एवरेस्ट, नंदादेवी (7818 m) नंगा पर्वत (8126 m) गोसाई थान (8013m) गाडविन आस्टीन (8611 m) कंचनजंघा (8598 m) मनसालू (8153m) आदि विशेष उल्लेखनीय है।

इस भाग में कई हिम नदियाँ स्थित है। अधिकांश हिमनदियों की लम्बाई 3-5 km तक है। इस पर्वत श्रेणियों में अनेक दर्रे भी मिलते है।

2) लघु हिमालय :— यह श्रेणी महान हिमालय के दक्षिण में उसी के समांतर विस्तृत है। यह 80-100 Km चौड़ी है। इसकी औसत ऊ- 1,828 - 3000 m और अधिकतम ऊँचाई 4500 Km है। पीर-पंजाल श्रेणी इसका पश्चिमी विस्तार ~~कश्मीर~~ कश्मीर राज्य में है। इसकी श्रेणियों में धौलाधार, पीरपंजाल, महाभारत लेख, चूरिया और मसूरी मुख्य है। भारत के विख्यात स्वास्थ्यवर्धक स्थान। शिमला, नैनीताल डलहौजी, दार्जिलिंग आदि इसी श्रेणी के नीचले भाग में स्थित है। यहाँ पाई जाने वाली चट्टानें अत्यधिक प्राचीन है। विवर्तनिक दृष्टि से ~~यह~~ इस श्रेणी में चूना पत्थर, स्लेट, क्वार्ट्ज तथा अन्य शिलाओं ~~का~~ की पर्याप्तता है। यहाँ कोणधारी वन पाये जाते हैं और ढालों पर छोटे-छोटे घास के मैदान पाये जाते हैं जिन्हें कश्मीर में मर्ग तथा उत्तराखण्ड में बुग्याल और पयार कहते है। मध्यवर्ती भाग में हरी भरी घाटियों को द्वार एवं दून के नाम से पुकारते हैं।

c) शिवालिक श्रेणी :- यह हिमालय का सबसे बाहरी दक्षिणी श्रेणी है जिसे बाह्य हिमालय भी कहते हैं। यह श्रेणी पंजाब में पोरस्त बेसिन के दक्षिण से आरंभ होकर पूर्व की ओर कोसी नदी तक विस्तृत है। यह 40-50 km चौड़ी है। इस श्रेणी का औसत ऊँचाई 1200 m है। यह हिमालय का सबसे नवीन भाग है। ऊँचा-नीचा, धरातल, तीव्र ढाल जिनपर भूस्खलन के साथ जमा हुआ अवसाद तथा गहरी घाटियाँ जिनकी दीवारें में पाई जाती है। इसको लघु हिमालय से अलग करने वाली घाटियों को पश्चिम में दून और पूर्व द्वार कहते हैं

d) ट्रांस या तिब्बत हिमालय श्रेणी :— यह महान हिमालय के पीछे तिब्बत के दक्षिणी भाग में विस्तृत है। अपने मध्य में यह 225 km तथा पूर्व और पश्चिम की ओर किनारों पर 40 km. चौड़ी है। इसकी लम्बाई 960 km है तथा यह 4,100 से 5,700 m ऊँची है। यह श्रेणी अवसादी शैलों से निर्मित है। यहाँ पर शीत कटिबंधीय जलवायु की अवस्थाएँ पाई जाती है जिसके परिणामस्वरूप यहाँ वनस्पति का पूर्णतः अभाव पाया जाता है। यह श्रेणी बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियों तथा उत्तर की ओर भूमि से घिरी हुई झीलों में गिरने वाली नदियों के लिए जल विभाजक का कार्य करती है। इस श्रेणी में कई दर्रे 5,200 मीटर ऊँचे हैं। -

I काराकोरम पर्वत श्रेणी :—

यह श्रेणी तिब्बत के पठार की रीढ़ कहलाती है। लेकिन स्वेन हैडेन ने इसे उच्च एशिया की रीढ़ कहा जाता है। इसकी प्रमुख शिखरों K_2 (8611 m), गशेर ब्रम (8070 m) मशेर ब्रम (7821 m) आदि है। यहाँ 23 शिखरें 7,500 m से अधिक से अधिक ऊँची है। यह श्रेणी मध्य व दक्षिणी एशिया के मध्य जल जल विभाजक है। इस श्रेणी में बाल्टेरो, सियाचिन तथा हिस्पर नामक हिमानियाँ स्थित हैं। K_2 श्रेणी के दक्षिण में आलिंग कांगड़ी व कैलाश श्रेणी के मध्य एक अन्य श्रेणी स्थित है जिसे स्वेन हैडेन ने ट्रांस हिमालय नाम से संबोधित किया है।

(ii) जास्कर पर्वत श्रेणी :— यह श्रेणी हिमालय की ही उत्तरी शाखा है जो लद्दाख श्रेणी व हिमालय के मध्य स्थित है। इस पर अधिक सर्वेक्षण नहीं हुए हैं। स्पंख व जास्कर नदियाँ इस श्रेणी को पार करती हैं। इसमें अनेक दर्रे भी स्थित हैं, जिनमें ...।

iii) तिब्बत का पठार :— भारत की उत्तरी सीमा स्थित इस पठार की औसत ऊँचाई 4000 m है। इसके उत्तर में पामीर तथा अधिक उत्तर में क्यानशान के पठार स्थित हैं। इस पर टोमर व लोयस मिट्टियों का अधिक विस्तार है यहाँ अनेक खारे जल की झीलें हैं। उच्च श्रेणियों के अभाव के फलस्वरूप यहाँ हिन्द महासागर की आर्द्र पवनें नहीं पहुँच पाती हैं।

2) वृहत मैदान :— (i) सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान → हिमालय पर्वत तथा दक्षिणी प्रायद्वीपीय पठार के बीच सिंधु, गंगा तथा ब्रह्मपुत्र नदियों की निक्षेप क्रिया द्वारा निर्मित एक विशाल मैदान स्थित है जिसे सिंधु-गंगा-ब्रह्मपुत्र का मैदान कहते हैं। भारत के उत्तरी भाग में स्थित होने के कारण इसे उत्तरी भारत का मैदान भी कहते हैं। गंगा और सिंधु नदियों के मुहाने के बीच पूर्व-पश्चिम दिशा में इसकी लम्बाई लगभग 3200 km तथा चौड़ाई 150-300 km है। असम में यह मैदान संकरा है और यहाँ इसकी चौड़ाई 90-100 km है। इसके अधिकांश भाग पर जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है। उच्चावच की दृष्टि से इस मैदानी भाग का विवरण निम्न है —

I भाबर प्रदेश :— यह शिवालिक के गिरिपाद प्रदेश में सिंधु नदी से तिस्ता नदी तक पाया जाता है। यह प्रदेश 8-16 Km चौड़ाई वाली संकरी पट्टी के रूप में स्थित है। गिरिपाद पर स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में नदियाँ बड़ी मात्रा में पत्थर, कंकड़, बजरी आदि लाकर जमा कर देती हैं जिससे पारगम्य चट्टानों का निर्माण होता है अतः इस क्षेत्र में पहुँचकर अनेक छोटी-छोटी नदियाँ भूमि

होकर अदृश्य हो जाती है। यह प्रदेश कृषि के लिए अधिक ~~उपयोगी~~ उपयोगी नहीं है।

II तराई प्रदेश :- यह भाबर के दक्षिण में वह मैदानी भाग होता है जहाँ भाबर की लुप्त नदियाँ फिर से भूमि पर प्रवाहित होती ~~है~~ हुई दिखाई देने लगती है। इसे ही तराई प्रदेश कहते है। इसकी चौड़ाई 20-30Km होती है।

III बांगर प्रदेश :- बांगर प्रदेश मैदान का वह ऊँचा भाग है जहाँ नदियों के बाढ़ का जल नहीं पहुँच पाती पाता है। इसमें ~~कंकड़~~ के रूप में चूनायुक्त संग्रथनों की अधिकता होती है।

IV खादर प्रदेश :- वह प्रदेश जहाँ बाढ़ का जल प्रति वर्ष पहुँचता है। बाढ़ के जल के साथ नवीन मिट्टी भी इस प्रदेश में बिछती रहती है। अतः खादर प्रदेश का निर्माण नवीन जलोढ़ द्वारा होता है। खादर प्रदेश अत्यधिक उपजाऊ होते है और यहाँ गहन खेती की जाती है।

V रेह :- बांगर मिट्टी के उन क्षेत्रों में जहाँ सिंचाई की अधिकता है, वहाँ पर कहीं-कहीं भूमि पर एक नमकीन सफेद परत बिछी हुई पायी जाती है। सफेद पर्त वाली इस मिट्टी को रेह या कल्लर के नाम से पुकारते है। & U.P. और हरियाणा के शुष्क भागों में इसका विस्तार सर्वाधिक है।

2) पंजाब एवं हरियाणा का मैदान :- सतलज, व्यास ~~रावी~~ रावी, चिनाब तथा झेलम नामक पाँच नदियों द्वारा निर्मित मैदान को पंजाब का मैदान कहते है। यह दोआबों से निर्मित मैदान है। इस मैदान के पाँच दोआब निम्न है -

a) व्यास एवं सतलज नदी के बीच का बिस्त-जालंधर दोआब।

b) व्यास एवं रावी नदी के बीच का बारी दोआब।

c) रावी एवं चिनाब नदी के बीच का रचना दोआब।

d) चिनाब एवं झेलम नदी के बीच का दोआब तथा।

(e) झेलम-चिनाब एवं सिंधु नदियों के बीच का सिंध सागर दोआब।

पंजाब की नदियों ने अपनी निक्षेपण क्रिया द्वारा इस मैदानी भाग में धाया, बेट, चो आदि भूआकृतियों का निर्माण किया।

(ब) गंगा का मैदान :—

गंगा का मैंदान उत्तर प्रदेश, बिहार तथा पश्चिमी बंगाल में विस्तृत है। इस मैंदान का डेल्टाई भाग पश्चिमी बंगाल तथा बंगलादेश में विस्तृत है। यह मैंदान हिमालय से निकलने वाली गंगा तथा इसकी सहायक नदियाँ यथा- यमुना गोमती घाघरा गंडक तथा कोसी के निक्षेपण क्रिया द्वारा निर्मित हुआ। दक्षिण के पठार से निकलने वाली चाबल बेतवा केन तथा सोन नदियों ने भी इस मैंदान के निर्माण अपना योगदान दिया है। इस सम्पूर्ण मैंदान का सामान्य ढाल पूर्व तथा दक्षिण पूर्व की तरफ है। गंगा-यमुना दोआब एक निश्चित भौगोलिक ईकाई है। यह अत्यधिक उपजाऊ है; यहाँ धरातलीय मोटाई 1000 से 2000 मीटर इसका सामान्य ढाल दक्षिण की तरफ हुआ है। गंगा यमुना दोआब एक निश्चित ~~है~~ भौगोलिक ईकाई है। यह अत्यधिक उपजाऊ है। यहाँ धरातलीय जलोढों की मोटाई 1000-2000 m है। इसका सामान्य ढाल दक्षिण की तरफ है। यह पुराने बांगर जलोढ से ~~चौबर~~ चौपार उच्च भूमियों का निर्माण हुआ।

=